Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 7 | ISSUE : 6 | JUNE 2021

जीवन स्तर की असमानता का प्रादेशिक आयाम : राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में

डॉ. अरुण कुमार शहैरिया [1]

[1] सह आचार्य, भूगोल, डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

राजस्थान राज्य अद्वितीय भौगोलिक विविधताओं वाला क्षेत्र है। क्षेत्रीय दृष्टि से इसका विस्तार अधिक है तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टियों से यहां पर भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न जीवन शैली देखने को मिलती है। यहाँ जनसंख्या की दशकीय वृद्धि 1991-2001 में 28 प्रतिशत थी जो देश के बड़े राज्यों में सर्वाधिक है। यहां की अनुसूचित जातियों का अनुपात 17% है जो कि लगभग देश में सर्वाधिक है यहां पर लगभग 12.5% अनुसूचित जनजाति के लोग भी रहते हैं । दलित लोगों की हिस्सेदारी लगभग 30% के करीब है। आमतौर पर ग्रामीण अधिवास यहां बिखरे हुए दिखाई देते हैं। आबादी की दृष्टि से देखा जाए तो छोटे-छोटे गांव की बहुलता भी दृष्टिगोचर होती है। राजस्थान का लगभग 60% भूभाग मरुस्थलीय है जो कि राज्य के पश्चिम क्षेत्र की ओर फैला हुआ है। राजस्थान के अरावली के पूर्व का भाव हरा भरा है और दक्षिण पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र में अनुसूचित जनजातियों का संकेंद्रण देखने को मिलता है। राजस्थान में गंगानगर जिला विद्यमान है जहां के किसान हरित क्रांति के कारण अत्यधिक समृद्धता को प्राप्त किए हुए हैं दूसरी ओर धुरपूर्वी क्षेत्र में धौलपुर जिले के अंतर्गत अधिकतर कृषि की निम्न दशायें भी देखने को मिलती है । राजस्थान में एक ओर परंपरागत लोग आज भी हस्तशिल्प से जुड़े हुए विभिन्न कलाकारिताओं में संलग्न है और दूसरी ओर मारवाड़ी समाज व्यापार जगत पर अपना अधिकार जमाये हुए है। राजस्थान में यदि देखें तो भेड़ों और ऊंटों के साथ चलवासी जीवन बिताने वाले लोग चारों ओर व्याप्त हैंयही नहीं व्यापारिक स्तर पर दुधारू जानवरों से दुग्ध का व्यवसाय करने वाले लोग भी यहां रहते हैं। प्राकृतिक दृष्टि से राजस्थान एक ऐसा राज्य है जो मौसम की मार झेलने वाला कारक भी है। यहां पर मानसून की असफलता के बाद भयंकर सूखा और अकाल भी जीवन को अस्त-व्यस्त कर देने वाला है। वास्तविकता तो यह है कि सतही जल और भूमिगत जल की कमी यहां पर आज भी बनी है। कई स्थितियों में यहां पर उपलब्ध जल मनुष्यों और जानवरों के पीने के लिए अपेक्षित नहीं है । साक्षरता की दृष्टि से यदि देखा जाए तो राजस्थान सबसे पिछड़े राज्यों में से एक है उसमें भी महिला साक्षरता दर यहां अत्यधिक निम्न है। फिर भी राजस्थान की यह विशेषता है कि यहां के निवासियों ने सामंजस्य स्थापित करके अपनी जीवनशैली का चुनाव अपने अपने ढंग से किया है। इसलिए वैश्वीकरण के इस युग में सामान्य जीवन स्तर बिताना भी एक बड़ी चुनौती है। इसलिए ऐसी गुणात्मक जीवन दशा विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए जो गरीबों के , प्रकृति के , महिलाओं के पक्ष में हो। इन समस्त जीवन दशाओं को प्रभावित करने वाले तत्वों के प्रकाश में जीवन स्तर का श्रेणीकरण करना एक दुर्लभ कार्य है । प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मानव जीवन की इन्हीं असमान जीवन दशाओं पर अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

KEYWORDS:

प्रादेशिक आयाम, राजस्थान, जीवन शैली, दशायें, शैक्षिक, आर्थिक।

आलेख प्रस्तुति

राजस्थान सरकार द्वारा उसके विकास और समृद्धि के लिए निरंतर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं जिनमें न केवल पर्यावरण प्रबंधन अपितु विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाएं भी सम्मिलित हैं। राजस्थान सरकार ने राज्य में जिलावार मानव विकास सूचकांक का परिकलन किया है। यह ऐसा संयुक्त सूचकांक है, जिसकी गणना में शिक्षा, स्वास्थ्य और आय को आधार बनाया गया है। हालांकि राजस्थान सरकार के इस प्रयास के नतीजे पूर्णतः सन्तोष जनक नहीं है। राजस्थान में रहन-सहन के स्तर को निर्धारित करने जैसे जटिल काम के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, आय और आवास को चार मुख्य फलक के रूप में रखा गया है। पुनः इन चारों फलकों के लिए किसी एक संकेतक के स्थान पर सात ऐसे संकेतकों का चुनाव किया जो क्रमशः शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य स्तर, आर्थिक स्तर आवासीय स्तर का समुचित प्रतिनिधित्व कर सकें जिससे राजस्थान में रहन-सहन के स्तर को समझने और समझाने का प्रयास सार्थक हो सके। इन चारों ही मानदण्डों का अलग-अलग और अन्त में ये चारों समवेत रूप में रहन-सहन के स्तर का जो चित्र प्रस्तुत करते हैं, उसकी सार्थकता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

Human Development in Rajasthan – 2002

(Based on Rajasthan Human Development Report – 2002, Govt. of Rajasthan)

क्रम	जिला	मानव विकास सूचकांक
1	Dungarpur	0.46
2	Banswara	0.47
3	Barmer	0.46
4	Udaipur	0.50
5	Jalore	0.50
6	Dholpur	0.50
7	Jhalawar	0.51
8	Jaisalmer	0.52
9	Sirohi	0.52
10	Bhilwara	0.52
11	Chittorgarh	0.53
12	Rajsamand	0.53
13	Tonk	0.53
14	Pali	0.53
15	Churu	0.54
16	Nagaur	0.54
17	Bundi	0.55
18	Bharatpur	0.56
19	Sikar	0.56
20	Jodhpur	0.57
21	Dausa	0.57
22	Sawaimadhopur	0.58
23	Karauli	0.58
24	Ajmer	0.58

25	Baran	0.58
26	Bikaner	0.59
27	Alwar	0.59
28	Jhunjhunu	0.59
29	Jaipur	0.61
30	Kota	0.61
31	Hanumangarh	0.64
32	Ganganagar	0.66

प्रस्तुत सूचकांक तालिका के माध्यम से राज्य के 32 जिलों का स्तर दर्शाया गया है।

1. **रहन-सहन का अति उच्च स्तर-** तालिका के माध्यम से स्पष्ट होता है कि उच्च स्तरीय वर्ग के क्षेत्रों में छः जिले आते हैं. जो क्रमश: जयपुर झुंझुनू कोटा, अजमेर, सीकर और गंगानगर हैं। ये सभी जिले राज्य के मध्य भाग में अजमेर, उत्तर में गंगानगर उत्तर-पूर्व में झुन्झुनू, सीकर और जयपुर दक्षिण-पूर्व में पाये जाते हैं। इन सभी जिलों की स्थिति अरावली पर्वत श्रेणी के उत्तर में झुझुनू, सीकर और जयपुर तथा मध्य भाग में अजमेर, हाडौती के पठारीय भाग के मध्य में कोटा तथा घग्घर के मैदानीय भाग में गंगानगर की अवस्थिति है। इस वर्ग (27-32) के सभी जिले रहन-सहन के स्तर में सबसे अच्छे हैं, इसलिए इन सभी जिलों को प्रथम वर्ग मे रखा गया है।

2. **रहन-सहन का उच्च स्तर:-** इस वर्ग के क्षेत्रों में छ: जिले आते हैं जो I जो अलवर, जोधपुर, सिरोही, बासवाडा बीकानेर और राजसम्भद हैं। ये सभी जिले राज्य के पश्चिम में जोधपुर, दक्षिण-पश्चिम में सिरोही, दक्षिण में राजसम्भद और बांसवाडा उत्तर पूर्व में अलवर तथा उत्तर-पश्चिम में बीकानेर पाये जाते हैं। ये सभी जिले रहन-सहन के स्तर में द्वितीय वर्ग में रखे गये हैं।

3. **रहन-सहन का मध्यम स्तर**:- इस वर्ग के क्षेत्रों में छः जिले आते हैं. जो क्रमशः भीलवाड़ा, भरतपुर, उदयपुर, हनुमानगढ़, पाली, दौसा हैं। ये जिले राज्य के उत्तर में हनुमानगढ़, पूर्व में दौसा और भरतपुर दक्षिण में भीलवाड़ा और उदयपुर तथा दक्षिण-पश्चिम में पाली पाये जाते हैं अरावली पर्वत श्रेणी के दक्षिण में भीलवाडा और उदयपुर तथा पश्चिम में पाली, राज्य के मैदानी भाग में भरतपुर और दौसा तथा घरघर के मैदानीय भाग में हनुमानगढ जिले स्थित है।

4. **रहन-सहन का निम्न स्तर** इस वर्ग के क्षेत्रों में छः जिले आते हैं, जो क्रमश: झालावाड, बारां, चुरू, टोंक, डुंगरपुर और चितोडगढ है। ये सभी जिले राज्य के दक्षिण में डूंगरपुर और चितौड़गढ़, दक्षिण-पूर्व में झालावाड़, बारा और टोंक, उत्तर में चूरू, पाये जाते हैं। हाड़ौती के पठारी भाग में झालावाड़ और बारा. पूर्वी मैदानी भाग में टोक और चितौड़गढ़, शुष्क मरूस्थलीय भाग में चुरू, अरावली पर्वत श्रेणी के दक्षिण में डूंगरपुर जिले स्थित हैं, जहाँ अधिकांश लोगों को मूलभूत सुविधाएँ नही मिल पाती हैं। यही कारण है कि रहन-सहन का स्तर निम्न है।

5. **रहन-सहन का अति निम्न स्तर** इन वर्ग के क्षेत्रों में आठ जिले आते हैं, जो क्रमश सवाई, माधोपुर, नागौर, बूँदी, धौलपुर, जैसलमेर, करौली, बाडमेर, और जालोर हैं। ये जिले राज्य के उत्तर में धौलपुर और करौली दक्षिण-पश्चिम में बाडमेर और जालौर तथा राज्य के मध्य भाग में नागौर पाये जाते हैं। मरूस्थलीय भाग में जैसलमेर, बाड़मेर जालौर और नागौर पूर्वी मैदानी भाग में सवाई माधोपुर, बूँदी, करौली और पूर्वी भाग में धौलपुर जिला स्थित है. जहाँ मूलभूत आवश्यकताओं की कमी के साथ ही अवस्थापनात्मक तत्वों का न्यायोचित वितरण नहीं मिलता है। ये सभी जिले रहन-सहन में सबसे नीचे आते हैं।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से अधिक रोचक परिणाम देखने को मिलते हैं जिनके द्वारा यह सामने आता है कि राजस्थान राज्य के रहन-सहन के स्तर की असमानता को प्रभावित करने वाला यहां का पारिस्थितिकी तंत्र ही है। इस राज्य का पश्चिमी भाग जो कि जैसलमेर, जालौर और बाड़मेर नामक जिलों से निर्मित होता है का रहन-सहन के दृष्टिकोण से राज्य में सबसे पिछड़ा हुआ स्थान है। इस क्षेत्र में सतही जल, भूमिगत जल और वर्षा जल तीनों की ही अत्यधिक कमी है। यह स्थल खेती की परिस्थितियों के लिए पूर्णतया प्रतिकूल दृष्टिगोचर होता है। हालांकि कृषि कार्य के अतिरिक्त पशुपालन भी अपने आप में महत्वपूर्ण है लेकिन उद्योग, परिवहन, व्यापार जैसी कृष्येतर गतिविधियों का विकास भी इस क्षेत्र में नहीं हो पाया है। जनसंख्या और मानव अधिवास यहां पर अत्यधिक विरल है। शिक्षा स्वास्थ्य जैसी नागरिक सुविधाएं यहां पर प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। जिसके कारण यहां की शिक्षा, अधिवास, रहन-सहन और सुविधाओं सभी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

राजस्थान क्षेत्र में दूसरा स्तर रहन-सहन की दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ा क्षेत्र हुआ है जो राज्य के पूर्वी भाग में अवस्थित है। यह धौलपुर, सवाई, माधोपुर, करौली और बूंदी जनपदों से मिलकर बना है। इस क्षेत्र में मानवीय पारिस्थितिकी दशाएं निम्न कोटि की हैं। यहां पर लोगों का जीवन यापन का ढंग परंपरागत रूप से चला रहा है। हालांकि प्राकृतिक परिस्थितियां अनुकूल है लेकिन फिर भी मानव संसाधन विकास का स्तर यहां पर भी निम्न ही है। शैक्षिक दृष्टि से यदि देखा जाए तो यह क्षेत्र अत्यधिक पिछड़ा हुआ है। महिलाओं की साक्षरता एवं शिक्षा यहां पर अत्यधिक निम्न है। यहां पर प्रति व्यक्ति आय भी बहुत कम है। रहन-सहन के स्तर से सर्वाधिक पिछड़े जिलों में नागौर जिला सम्मिलित है जिसकी स्थिति पूरे राज्य में केंद्रीय स्तर पर है। राज्य के बीचों-बीच स्थित यह जिला भी रहन-सहन के स्तर में अत्यधिक पिछड़ा हुआ है। कुल मिलाकर आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य दशाओं के संकेतक भी जिले का यही चित्र प्रस्तुत करते हुए दिखाई देते हैं।

राज्य की राजधानी और देश के पैंतीस दसलक्षी नगरों में गणित जयपुर नगर इसी नाम के जिले में स्थित है। इस जिले में समस्त व्यवस्थाएं अत्यधिक उत्तम है। स्थिति, जीवन स्तर, सुविधाएं, शिक्षा, व्यापार, उद्योग, परिवहन, संस्कृति, कला आदि सभी की दृष्टि से यह अति उत्तम नगर है। यदि देखा जाए तो यह प्रथम स्थान पर आता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रशासनिक केंद्र के साथ-साथ जयपुर संस्कृति, कला, सभ्यता का एक विशाल केंद्र भी है जहां पर विभिन्न प्रकार की नागरिक सुविधाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य और विभिन्न प्रकार के कार्यों का प्रसार भी देखने को मिलता है। यह पर्यटन की दृष्टि से भी एक दर्शनीय स्थल है। कलाकृतियां दूर-दूर से आए हुए व्यक्तियों के हृदय को मोह लेती है। इसी कारण अर्थव्यवस्था को लेकर भी जयपुर जिला अनेक प्रकार से सहयोग प्रदान करता है।

जयपुर जिले के निकटवर्ती स्थल झुंझुनू, सीकर और अजमेर भी रहन-सहन की दृष्टि से अत्यधिक उच्च गति को प्राप्त हैं। श्रेष्ठता के लिए भौतिक दशाओं के साथ-साथ सांस्कृतिक दशाएं भी बहुत सीमा तक उत्तरदाई हैं। यहां की जाति, धर्म संरचना का भी इसकी श्रेष्ठता में अच्छा योगदान है। राज्य के उत्तरी भाग में स्थित गंगानगर जिला भी इसी कोटि का जिला है अर्थात रहन-सहन की दृष्टि से यह भी अत्यधिक उच्च है। यह जिला इंदिरा गांधी क्षेत्र परियोजना के कारण उच्च सिंचाई वाला क्षेत्र बन गया है। यहां पर अत्यधिक परिश्रमी किसानों के योगदान दिये जाने से यह कृषि में भी अग्रणी है। राजस्थान में हरित क्रांति से सर्वाधिक लाभान्वित होने वाला जिला भी यही है। शैक्षिक आवासों की बदौलत रहन-सहन की स्थिति में अत्यधिक उत्तम स्थिति को प्राप्त करता है।

निष्कर्ष:-

सार रूप में कहा जा सकता है कि राजस्थान क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले समस्त जिले अपनी-अपनी भौगोलिक अवस्थितियों के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विविधताओं को धारण करते हैं। शोध अध्ययन के द्वारा यह सामने आता है कि यदि राजस्थान के समस्त जिलों में योजनाओं का प्रभाव पहुंचे, प्रत्येक व्यक्ति मात्र तक योजनाओं का लाभ पहुंचे, व्यक्ति मात्र तक सुविधाओं की पहुंच हो तो वह सभी समस्त क्षेत्रों में विकास को प्राप्त कर सकते हैं। यही नहीं शिक्षा की दृष्टि से भी राजस्थान का प्रत्येक जिला आगे आने में सक्षम हो सकता है। यदि आभाव है तो सुविधाओं के मनुष्य की पहुंच तक का अभाव है। सुविधाओं के प्राप्त न होने के कारण से राजस्थान के बहुत से जिले पिछड़े हुए हैं जहां पर रहन-सहन का स्तर, व्यवसाय, व्यापार, शिक्षा, संस्कृति सभी कुछ अंधेरे में है। उन सभी में अपेक्षित सुधार के लिए सरकारी योजनाओं को राजस्थान के प्रत्येक भूभाग से जोड़ना होगा। तभी वहां पर मनुष्य का प्रादेशिक जीवन अनुकूल हो पाएगा।

REFERENCES

1. United Nations Development Programme: Human Development Reports of Different Years, Oxford University Press, Oxford.

2. Smith D. M. (1973), The Geography of Social Well-Being, Mc Graw-Hill, New York.

3. Sundaram K. V. (1983), Geography of Underdevelopment, Concept, New Delhi.

4. Williamson J. G. (1965), "Regional Inequality and the process of national development: a description of pattern", Economic Development

and Cultural Change, 4, Part 2, 3-84.

5. Smith D. M. (1977), Human Geography: A Welfare Approach, Edward Arnold, London.

6. Wood H. A. (1977), Towards a geographical concept of Development, Geographical Review, 67, pp. 462-468.